दिल के टुकड़े टुकड़े करके मुस्करा के चल दिए ...

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

दोस्तों, आज हम बात कर रहे हैं एक ऐसी बेहतरीन संगीतकार की जिन्होंने सिद्ध किया कि महिलाएं भी अपनी मेहनत और प्रतिभा के दम पर पुरुष प्रधान संगीत जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बना सकती हैं. ज़ी हां, वो कामयाब संगीतकार हैं उषा खन्ना. भारतीय फ़िल्म संगीत के इतिहास में उषा खन्ना का नाम अत्यंत सम्मान और आदर के साथ लिया जाता है. वे हिंदी सिनेमा की उन चुनिंदा महिला संगीतकारों में से हैं जिन्होंने पुरुष प्रधान संगीत जगत में अपनी अलग पहचान बनाई. वे जद्दन बाई (अभिनेत्री नरगिस की माँ) और सरस्वती देवी के बाद हिंदी सिनेमा की तीसरी महिला संगीतकार हैं. ये भी उल्लेखनीय है कि उन्होंने इन महिला संगीतकारों में सबसे लम्बी पारी खेली.

मुमकिन है, नई पीढ़ी उषा खन्ना के नाम से अनजान हो, लेकिन उनकी धुनों से सजे गाने आज भी खूब सुने जाते हैं. फिर चाहे वो उनके मस्ती भरे गीत 'दिल दे के देखो, दिल दे के देखो जी' (दिल दे के देखो) और 'शायद मेरी शादी का ख्याल दिल में आया है' (सौतन) हों या फिर उनकी रूमानी बंदिशे, 'हम और तुम और ये समा' (दिल दे के देखो) और 'तू इस तरह से मेरी जिंदगी में शामिल है' (आप तो ऐसे न थे) हों या फिर फ़िल्म 'हवस' का रफ़ी साहब का गाया दर्द भरा गीत 'तेरी गलियों में न रखेंगे कदम आज के बाद' हो, ये सारे गीत आज भी बड़े लोकप्रिय हैं. 'शबनम', 'एक सपेरा एक लुटेरा', 'सबक', 'दादा' आदि फ़िल्मों के नाम आपने न भी सुने हों तो भी आपको इनके गाने ज़रुर याद होंगे. उनकी फ़िल्म 'शबनम' के गीत 'मैंने रक्खा है मोहब्बत अपने अफसाने का नाम' और 'ये तेरी सादगी ये तेरा बांकपन', फ़िल्म 'एक सपेरा एक लुटेरा' का 'हम तुमसे जुदा हो के मर जायेंगे रो रो के', फ़िल्म 'सबक' का गीत 'बरखा रानी जरा जमके बरसो' और फ़िल्म 'दादा' का गीत 'दिल के टुकड़े टुकड़े करके मुस्करा के चल दिए' आज भी अनगिनित संगीत प्रेमियों के फेवरिट गीत हैं.

मधुर धुनों और आधुनिक तथा भारतीय संगीत के सुंदर समन्वय ने उन्हें हिंदी फ़िल्म संगीत जगत में विशिष्ट स्थान दिलाया. उषा खन्ना का जन्म ग्वालियर में हुआ था. उनके पिता मनोहर खन्ना शायर थे और 'जावेद अनवर' नाम से लिखते थे. घर में साहित्य और संगीत का वातावरण होने के कारण उषा खन्ना की रुचि बचपन से ही संगीत की ओर हो गई. उन्होंने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की और कम उम्र में ही धुनें बनाना प्रारंभ कर दिया. उस दौर में फ़िल्म संगीत की दुनिया पर पूरी तरह पुरुष संगीतकारों का वर्चस्व था . ऐसे समय में उषा खन्ना का संगीत निर्देशन में आना अपने आप में बड़ी उपलब्धि थी. प्रसिद्ध संगीतकार ओ. पी. नैयर ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें प्रोत्साहित किया.

उषा खन्ना बचपन में एक गायिका बनना चाहती थीं, लेकिन उनके पिता के मित्र गीतकार इंदीवर की सलाह पर उन्होंने संगीत निर्देशन की राह चुनी. इंदीवर उन्हें मशहूर फिल्म निर्माता शशधर मुखर्जी के पास ले गए, जो उनकी गायकी से तो नहीं मगर उनके संगीत से काफी प्रभावित हुए और इस प्रकार उन्होंने मात्र 17 साल की उम्र में शशधर मुख़र्जी की फ़िल्म 'दिल दे के देखो' (1959) से अपने संगीतकार करियर की शुरुआत की. संयोग से ये फ़िल्म अभिनेत्री 'आशा पारेख' की भी पहली फ़िल्म थी. इस फ़िल्म के सारे गीत, खासकर 'दिल दे के देखो, दिल दे के देखो' और 'हम और तुम और ये समा', 'बोलो बोलो कुछ तो बोलो', 'यार चुलबुला है', 'प्यार की कसम है, ना देखे ऐसे प्यार से', सुपर हिट रहे और वे रातोंरात चर्चित संगीतकार बन गईं. खासकर फ़िल्म का शीर्षक गीत 'दिल देके देखो,दिल देके देखो,दिल देके देखो जी,दिल लेने वालों,दिल देना

सीखो जी' श्रोताओं की जुबां पर चढ़ गया.

इसके बाद शशधर मुखर्जी ने ही उन्हें एक बार फिर अपनी एक और फिल्म 'हम हिंदुस्तानी' (1960) के संगीत निर्देशन का जिम्मा सौंपा . इस फ़िल्म का शीर्षक गीत 'छोड़ो कल की बातें कल की बात पुरानी' काफ़ी लोकप्रिय हुआ. इसके अलावा इस फ़िल्म के लता जी के गाये गीत 'मांझी मेरी किस्मत के तू चाहे जहाँ ले चल' को भी काफ़ी सराहा गया. इसके बाद तो उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अपने लगभग पाँच दशकों के कामयाब फ़िल्मी सफ़र में 250 से अधिक फ़िल्मों में 800 से अधिक गानों को संगीत दिया. ये उपलब्धि उन्हें हिंदी सिनेमा के सफल संगीतकारों में शामिल करती है.

उषा खन्ना ने कई सफल फ़िल्मों में संगीत दिया. उनकी प्रमुख फ़िल्मों में—दिल देके देखो, हम हिंदुस्तानी, हवस, शबनम, सबक, आओ प्यार करें, एक सपेरा एक लुटेरा, दादा, साजन बिना सुहागन, सजन की सहेली, अगर तुम न होते, आप तो ऐसे न थे, सौतन, बेवफा से वफ़ा, आदि फ़िल्में शामिल हैं .

शुरुआती दिनों में जब वे स्टूडियो जाती थीं, तो लोग उन्हें गंभीरता से नहीं लेते थे. लेकिन अपनी बेहतरीन धुनों और आत्मविश्वास से उन्होंने जल्द ही सिद्ध कर दिया कि वे किसी पुरुष संगीतकार से कम नहीं हैं. उषा खन्ना की धुनों में एक नयापन था, एक ताज़गी थी, हालांकि उनके शुरू के गानों पर ओ. पी. नैयर की शैली का प्रभाव दिखाई देता है. उन्होंने मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, मन्नाडे, लता मंगेशकर और आशा भोंसले जैसे दिग्गज कलाकारों के साथ काम किया. उनके द्वारा संगीतबद्ध कई गीत आज भी संगीत प्रेमियों की जुबां पर हैं . उन्होंने फ़िल्म जगत को, 'दिल देकर देखो', 'हम और तुम और ये समा' (दिल देकर देखो), 'अपने लिए जिए तो क्या जिए' (बादल), 'हाय तबस्सुम तेरा,धूप खिल गयी रात में' (निशान), 'हम तुमसे जुदा होके, मर जायेंगे रो रो के' (एक सपेरा एक लुटेरा), मैंने रखा है मोहब्बत अपने अफसाने का नाम' (शबनम), 'ये तेरी सादगी ये तेरा बांकपन' (शबनम) 'चांद को क्या मालूम चाहता है उसे क़ोई चकोर' (लाल बंगला), 'तेरी गलियों में न रखेंगे कदम आज के बाद' (हवस), 'बरखा रानी जरा जमके बरसो' (सबक), 'आज तुमसे दूर होकर ऐसे रोया मेरा प्यार' (एक रात), 'दिल के टुकड़े टुकड़े करके मुस्करा के चल दिए', 'मौला तू रहम करना' (दादा), 'मधुबन खुशबू देता है' (साजन बिना सुहागन), 'ज़िंदगी प्यार का गीत है', 'शायद मेरी शादी का ख्याल दिल में आया है' (सौतन) 'अजनबी कौन हो तुम जब से तुम्हें देखा है' (स्वीकार किया मैंने), 'तू इस तरह से मेरी जिंदगी में शामिल है' (आप तो ऐसे न थे), 'तू जो कहे तो राधा बनूं मैं' (लैला), 'देखो प्यार में ऐसा नहीं करते' (होटल), 'जीजाजी जीजाजी भोले भाले जीजाजी', 'दोस्त बन के आये हो' (बिन फेरे हम तेरे) जैसे सुपर हिट सदाबहार गीत दिए .

उषा खन्ना का विवाह प्रसिद्ध फ़िल्म निर्देशक और गीतकार सावन कुमार टाक से हुआ था. हालांकि बाद में मतभेदों के चलते दोनों अलग हो गए, किंतु उन्होंने अपने पेशेवर संबंध कायम रखे. उल्लेखनीय हैं कि सावन कुमार की अधिकतर फिल्मों का संगीत उषा खन्ना जी ने तैयार किया है. उषा खन्ना ने भारतीय फ़िल्म संगीत को एक नया रंग दिया . उनकी धुनों में भारतीय संस्कृति की मिठास और आधुनिक संगीत का आकर्षण दोनों दिखाई देते हैं. उन्होंने उन गायकों को मौका दिया, जो उस समय बहुत कम जाने जाते थे जैसे अनुपमा देशपांडे, पंकज उधास, हेमलता, मोहम्मद अज़ीज़, रूप कुमार राठौड़, शब्बीर कुमार और सोनू निगम आदि . इनमें से कई बाद में बड़े कामयाब गायक साबित हुए . उन्होंने कुछ गीत भी गाए हैं. फ़िल्म 'जॉनी मेरा नाम' के 'पल भर के लिए कोई हमें प्यार कर ले' में उन्होंने किशोर कुमार के साथ कुछ पंक्तियां गुनगुनाई हैं . इसी प्रकार 'अनजान है कोई' फ़िल्म का मोहम्मद रफी के साथ उनकी आवाज वाला गीत 'शाम देखो ढल रही है' खासा लोकप्रिय रहा. उनके द्वारा गाये गैर-फिल्मी एलबम 'मौसम' की निदा फ़ाज़ली साहब की ग़ज़लें भी संगीत प्रेमियों द्वारा काफ़ी पसंद की गई .

नब्बे के दशक के मध्य तक उषा खन्ना एक संगीतकार के रूप में काफी सक्रिय रहीं. 1979 में गायक येसुदास को उनके संगीत निर्देशित फिल्म 'दादा' में उनके गीत 'दिल के टुकड़े टुकड़े कर के मुस्करा के' के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार भी मिला. उनकी संगीतबद्ध आखिरी फिल्म वर्ष 2003 की 'दिल परदेसी हो गया' थी , जिसका निर्माण और निर्देशन उनके पूर्व पति सावन कुमार ने किया था. उन्होंने हिंदी फ़िल्मों के अलावा कुछ मलयाली और तमिल फ़िल्मों में भी संगीत दिया. मशहूर अभिनेत्री आशा पारेख के लोकप्रिय टीवी सीरियल 'कोरा-काग़ज़' में भी उन्होंने संगीत दिया.

उषा खन्ना हिंदी फ़िल्म संगीत की एक ऐसी सशक्त हस्ती हैं जिन्होंने अपनी मेहनत, लगन और संगीत प्रतिभा से एक इतिहास रचा. उन्होंने न केवल यादगार धुनें दीं, बल्कि भारतीय फ़िल्मी संगीत में महिलाओं के लिए नए रास्ते भी खोले. उनका योगदान भारतीय संगीत जगत में सदैव याद किया जायेगा. आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी, तब तक उषा जी के सदाबहार नग्मे सुनिए और सदा आनंदित रहिये .... !!

राघव की नई कॉमेडी का धमाकेदार ट्रेलर रिलीज

राघव जुयाल अभिनीत कॉमेडी फिल्म 'भाई तेरा स्टार है' का ट्रेलर रिलीज़ कर दिया गया है. टीज़र से दर्शकों की उत्सुकता बढ़ाने के बाद मेकर्स ने फिल्म का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर जारी किया है. ट्रेलर में दर्शकों को अजय सिंह की मज़ेदार, अतरंगी और पूरी तरह मनोरंजन से भरपूर दुनिया की झलक देखने को मिलती है. हाल ही में अपनी दमदार अदाकारी से चर्चा में रहे राघव जुयाल इस बार एक बिल्कुल नए कॉमिक अवतार में नजर आएंगे. ट्रेलर एक ऐसे सफर की झलक पेश करता है, जहां बड़े सपने, बेतहाशा अफरा-तफरी और अनगिनत हास्यास्पद घटनाएं मिलकर दर्शकों के लिए हंसी और मनोरंजन का भरपूर तड़का लगाती हैं.

दमदार परफॉर्मेंस, मज़ेदार किरदार और भरपूर ड्रामा इसे एक फैमिली एंटरटेनर के रूप में पेश करते हैं. ट्रेलर की शुरुआत संवाद, एक एक्टर का सबसे बड़ा टैलेंट होता है अपनी ही बकवास पर यकीन करना, से होती है. इसके साथ ही फिल्म पहले ही फ्रेम से बड़े-बड़े ड्रामे, ओवर-द-टॉप स्थितियों और भरपूर कॉमेडी का माहौल तैयार करती है. फिल्म में कॉमेडी, ड्रामा, अतरंगे किरदार और लगातार हंसाने वाले पल देखने को मिलेंगे. फिल्म में राघव जुयाल अपनी शानदार स्क्रीन प्रेजेंस और बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग से छाप छोड़ते नजर आते हैं.

जाह्नवी के रिसेप्शन लुक ने जीता दिल

मेहंदी ने चुराई लाइमलाइट

अंशुला कपूर के वेडिंग रिसेप्शन में बॉलीवुड सितारों का जमावड़ा देखने को मिला, लेकिन सबसे ज्यादा सुर्खियां जाह्नवी कपूर ने बटोरीं. अपने शानदार फैशन सेंस और ग्रेसफुल अंदाज के लिए मशहूर जाह्नवी इस खास मौके पर फैशन डिजाइनर मनीष मल्होत्रा की डिजाइन की हुई हल्के रंग की बेहद खूबसूरत साड़ी में नजर आईं. मिनिमल मेकअप, स्टेटमेंट ज्वेलरी और एलिगेंट हेयरस्टाइल के साथ उनका पूरा लुक सोशल मीडिया पर छा गया.

जब जाह्नवी ने रिसेप्शन की तस्वीरें अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर कीं तो फैंस की नजर उनके हाथों की मेहंदी पर टिक गई. तस्वीरों को जूम करके देखने पर लोगों ने पाया कि मेहंदी के डिजाइन में बेहद खूबसूरती से 'शिखू' लिखा हुआ है, जो शिखर पहाड़िया का निकनेम माना जाता है. खास बात यह रही कि अभिनेत्री ने पूरा नाम लिखने की बजाय निकनेम को अपनी मेहंदी का हिस्सा बनाया, जिसने इस इशारे को और भी खास बना दिया.

सोशल मीडिया पर यह डिटेल सामने आते ही फैंस ने अलग-अलग तरह की प्रतिक्रियाएं देना शुरू कर दिया.

टेलीविजन हलचल

रौनक ने अपनाई पार्थ की जहरीली सोच

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में आए जनरेशन लीप के बाद कहानी पूरी तरह नई दिशा में बढ़ रही है. अब शो का फोकस करण और उसकी नई पीढ़ी पर है, जहां हर किरदार अपने भीतर एक अलग राज छिपाए हुए है. करण को भरोसा है कि उसके सख्त नियमों और अनुशासन ने उसके बच्चों को जिम्मेदार बनाया है, लेकिन उसके विश्वास की नींव धीरे-धीरे कमजोर होती दिख रही है. समायरा और गरिमा जहां पिता की नजरों से बचकर अपनी मर्जी की जिंदगी जी रही हैं, वहीं रौनक का किरदार सबसे बड़ा ट्विस्ट लेकर आया है. बाहर से शांत, समझदार और आज्ञाकारी दिखने वाला रौनक भीतर ही भीतर पार्थ की सोच को अपना चुका है. वह महिलाओं को पुरुषों से कमतर मानता है और उन्हें हमेशा नियंत्रण में रखने की मानसिकता रखता है. उसकी यही सोच उसे धीरे-धीरे पार्थ की राह पर ले जा रही है. रौनक की नफरत सिर्फ महिलाओं तक सीमित नहीं है. वह अपनी बहनों के प्रति भी सम्मान नहीं रखता और तुलसी से गहरी दुश्मनी पाल चुका है. उसका मानना है कि पार्थ की मौत के लिए तुलसी जिम्मेदार हैं. यही वजह है कि वह उन्हें कभी माफ नहीं कर सकता. शो में संकेत मिल रहे हैं कि रौनक का यह गुस्सा और नफरत आगे चलकर किसी बड़े हादसे की वजह बन सकती है.

प्रेम का गुस्सा पड़ा भारी, राही ने छोड़ा साथ

स्टार प्लस के चर्चित शो 'अनुपमा' में आने वाले एपिसोड्स में रिश्तों की कड़वाहट और भावनात्मक टकराव दर्शकों को बांधे रखने वाले हैं. अनुपमा से मुलाकात के बाद प्रेम पूरी तरह गुस्से और बदले की भावना से भर जाता है. वह मानता है कि अब उसकी मौजूदगी में अनुपमा कभी जीत हासिल नहीं कर पाएगी और उसे हराने का हर संभव प्रयास करेगा .प्रेम, राही से पूछता है कि क्या वह अनुपमा को हराने की उसकी लड़ाई में उसके साथ खड़ी है. राही स्पष्ट शब्दों में जवाब देती है कि वह प्रतियोगिता में उसका समर्थन करेगी, लेकिन किसी भी गैरकानूनी या गलत तरीके का हिस्सा नहीं बनेगी. राही का यह जवाब प्रेम को बिल्कुल पसंद नहीं आता और उसका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच जाता है. विवाद इतना बढ़ जाता है कि राही यह फैसला कर लेती है कि जब तक प्रेम अपने भीतर की बदले की भावना नहीं छोड़ता, तब तक वह उसके साथ एक ही कमरे में नहीं रहेगी. राही की बात सुनकर प्रेम उसे घर छोड़ने तक की बात कह देता है. जब राही कहती है कि यह घर उसका भी है, तब प्रेम दावा करता है कि इस घर पर सिर्फ उसी का अधिकार है. इस घटना से राही अंदर तक टूट जाती है. वह अनुपमा से अपना दर्द साझा करते हुए कहती है कि शायद किसी भी महिला का अपना घर नहीं होता, जहां वह पूरी तरह अपने अधिकार से रह सके. राही की यह बात अनुपमा के दिल को गहराई से छू जाती है और वह एक बड़ा फैसला लेती है. अनुपमा संकल्प करती है कि वह प्रतियोगिता जीतेगी और अपनी मेहनत से ऐसा घर बनाएगी, जहां किसी को भी उसे निकालने का अधिकार न हो .

बारिश की वापसी के साथ लौटेगा तुंबाड 2 का खौफ

मेकर्स के नए पोस्ट ने बढ़ाई बेचैनी

फोकलोर हॉरर की दुनिया में अपनी अलग पहचान बना चुकी 'तुंबाड' अब एक बार फिर चर्चा में है. फिल्म के सीक्वल 'तुंबाड 2' को लेकर लंबे समय से इंतजार कर रहे फैंस के लिए मेकर्स ने एक रोमांचक अपडेट साझा किया है. सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई नई तस्वीर में बारिश के बीच रखी फिल्म की स्क्रिप्ट दिखाई गई है, जिसने पहली फिल्म के आइकॉनिक माहौल की यादें ताजा कर दी हैं.

इस पोस्ट के साथ मेकर्स ने लिखा, बारिश तो आपको याद है, इस बार उसकी तबाही महसूस होगी. यही एक लाइन फैंस की उत्सुकता बढ़ाने के लिए काफी साबित हुई. पहली फिल्म में लगातार बरसती बारिश सिर्फ एक मौसम नहीं, बल्कि कहानी का अहम हिस्सा थी. उसी रहस्यमयी और डरावने वातावरण ने 'तुंबाड' को दूसरी हॉरर फिल्मों से अलग पहचान दिलाई थी. अब मेकर्स के नए संकेत से माना जा रहा है कि सीक्वल में भी बारिश कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा होगी, लेकिन इस बार उसका प्रभाव और भी भयावह नजर आएगा. तुंबाड ने अपनी रिलीज के बाद धीरे-धीरे दर्शकों के बीच एक मजबूत फैन बेस तैयार किया. शानदार सिनेमैटोग्राफी, लोककथाओं पर आधारित कहानी, दमदार बैकग्राउंड स्कोर और अनोखे विजुअल्स की वजह से फिल्म को भारतीय सिनेमा की बेहतरीन हॉरर फिल्मों में गिना जाने लगा. री-रिलीज के दौरान भी दर्शकों ने फिल्म को जबरदस्त प्यार दिया, जिससे यह बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड बनाने में सफल रही. अब सीक्वल को लेकर उम्मीदें पहले से कहीं ज्यादा बढ़ गई हैं. माना जा रहा है कि 'तुंबाड 2' बड़े स्केल, आधुनिक तकनीक और और भी प्रभावशाली विजुअल ट्रीटमेंट के साथ दर्शकों के सामने आएगी. हालांकि, मेकर्स ने अभी कहानी, स्टार कास्ट या रिलीज डेट से जुड़ी कोई आधिकारिक जानकारी साझा नहीं की है.

केके मेनन की नई सीरीज 24 जुलाई को रिलीज

के के मेनन अभिनीत प्राइम ओरिजिनल कॉमेडी-ड्रामा सीरीज़ आदर्श बाल विद्यालय का वर्ल्डवाइड प्रीमियर 24 जुलाई को होगा। यह सीरीज़ प्राइम वीडियो पर भारत सहित दुनिया के 240 देशों और क्षेत्रों में हिंदी भाषा में अंग्रेज़ी सबटाइटल के साथ स्ट्रीम की जाएगी.सात एपिसोड वाली इस सीरीज़ का निर्देशन हिमांक गौर ने किया है. इसके एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर बिस्वपति सरकार और समीर सक्सेना हैं. इसका निर्माण पोशम पा पिक्चर्स के बैनर तले किया गया है. सीरीज़ की कहानी बिस्वपति सरकार, अक्षय अस्थाना, नूपुर पाई, तत्सत पांडे और मेघना श्रीवास्तव ने मिलकर लिखी है. आदर्श बाल विद्यालय की कहानी एक बदहाल सरकारी स्कूल के बेफिक्र हेडमास्टर ज्ञानेश्वर त्रिपाठी के इर्द-गिर्द घूमती है. कैंब्रिज में आयोजित एक सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने की उनकी इच्छा उन्हें अपने स्कूल की तस्वीर बदलने के मिशन पर ले जाती है. शिक्षकों की एक अनोखी टीम के साथ वह संसाधनों की कमी, शरारती बच्चों, अभिभावकों की बेरुखी और प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करते हुए स्कूल को नई पहचान दिलाने की कोशिश करते हैं.

दीपिका पादुकोण ने शूट किया नया ऐड

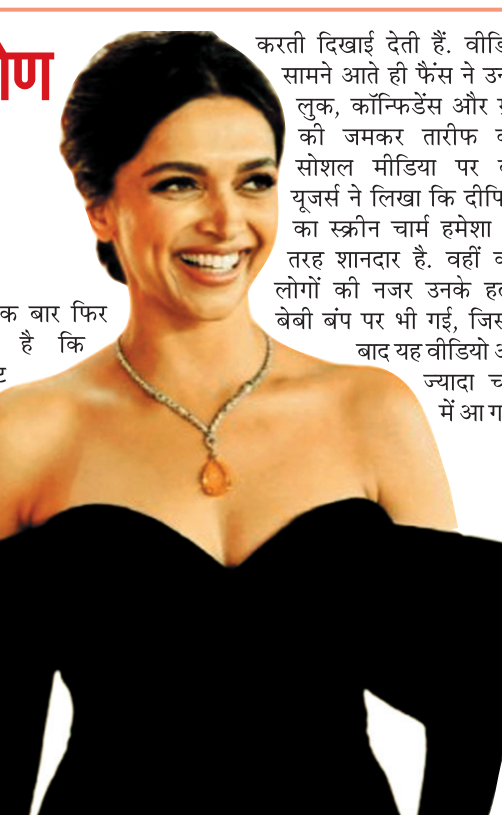

दीपिका पादुकोण ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि प्रोफेशनल कमिटमेंट और शानदार स्क्रीन प्रेजेंस उन्हें इंडस्ट्री की सबसे अलग अभिनेत्रियों में शामिल करते हैं. हाल ही में ग्लोबल होटल ब्रांड हिल्टन के नए इंटरनेशनल कैंपेन में उनकी मौजूदगी ने सोशल मीडिया पर खूब सुर्खियां बटोरी हैं.

इस विज्ञापन में दीपिका ब्रांड एंबेसडर के रूप में नजर आ रही हैं और एक लग्जरी होटल प्रॉपर्टी के अंदर ब्लू पैंटसूट में स्टाइलिश अंदाज में डांस करती दिखाई देती हैं. वीडियो सामने आते ही फैंस ने उनके लुक, कॉन्फिडेंस और ग्रेस की जमकर तारीफ की. सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने लिखा कि दीपिका का स्क्रीन चार्म हमेशा की तरह शानदार है. वहीं कुछ लोगों की नजर उनके हल्के बेबी बंप पर भी गई, जिसके बाद यह वीडियो और ज्यादा चर्चा में आ गया.

आमिर ने गौरी को दिया बेशकीमती तोहफा

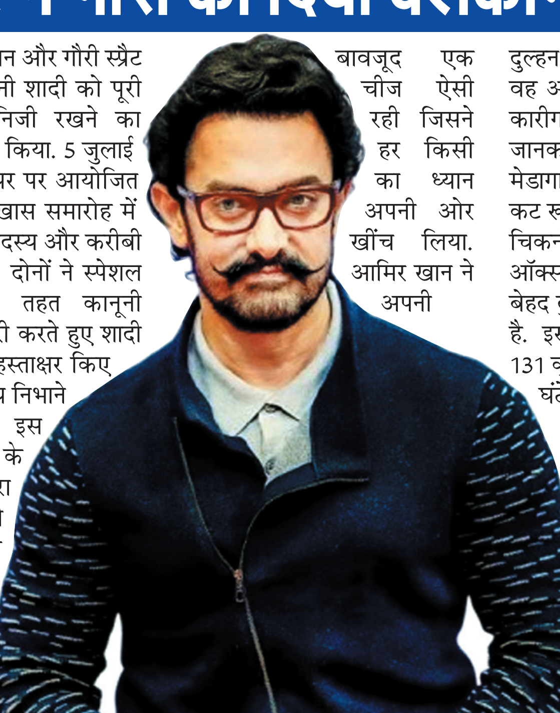

आमिर खान और गौरी स्प्रैट ने अपनी शादी को पूरी तरह निजी रखने का फैसला किया. 5 जुलाई को अभिनेता के घर पर आयोजित इस छोटे लेकिन खास समारोह में सिर्फ परिवार के सदस्य और करीबी दोस्त शामिल हुए. दोनों ने स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत कानूनी औपचारिकताएं पूरी करते हुए शादी के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए और जीवनभर साथ निभाने का वादा किया. इस मौके पर आमिर के बच्चे जुनैद, आयरा और आजाद भी मौजूद रहे, जबकि गौरी के बेटे ने भी इस नए रिश्ते की खुशी में परिवार का साथ दिया.

शादी की सादगी के बावजूद एक चीज ऐसी रही जिसने हर किसी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया. आमिर खान ने अपनी दुल्हन के लिए जो वेडिंग रिंग चुनी, वह अपनी डिजाइन, दुर्लभता और कारीगरी के कारण चर्चा में आ गई. जानकारी के मुताबिक, यह अंगूठी मेडागास्कर की प्राकृतिक कैबोशॉन-कट रूबी से तैयार की गई है. इसकी चिकनी गुंबदाकार बनावट और गहरे ऑक्सब्लड रेड रंग के कारण यह रत्न बेहद दुर्लभ और कीमती माना जाता है. इस खास रिंग को तैयार करने में 131 कुशल कारीगरों ने लगभग 256 घंटे तक काम किया.

बारीक हस्तकला और प्रीमियम फिनिशिंग के कारण यह अंगूठी सिर्फ एक ज्वेलरी पीस नहीं, बल्कि शिल्पकला का उत्कृष्ट नमूना मानी जा रही है. इसी वजह से शादी के बाद यह रिंग सोशल मीडिया और एंटरटेनमेंट जगत में चर्चा का केंद्र बन गई है.